कुछ क्रिएटिव हो जाए!

गर्मियों में शारीरिक गतिविधियां कम होने लगती हैं। बच्चे घर में बैठकर बोर होते हैं। आइए कुछ ऐसा इनडोर करें जिससे बाद में भी फायदा उठाया जा सके...

कॉलम- इनडोर गेम्स

न स्कूल जाने का टेंशन, न ही होमवर्क की फिक्र। बस दिनभर मस्ती और खेल। क्या?...धूप की वजह से आप नहीं जा पाते खेलने। अरे! कोई नहीं, हम हैं तो क्या गम है। इनडोर गेम्स का ये कॉलम आप सब के लिए ही तो है। जानिए इन रोचक खेलों के बारे में जिन्हें आप घर में बैठे-बैठे खेल सकते हैं। फिर देखिए क्या है खास इस बार...!

कहानी पढ़ना आपको अच्छा लगता है न और कई विज्ञापन भी ऐसे होते होंगे, जिन्हें देखकर हंसना बंद ही नहीं होता। आप सोचते होंगे न कि ये तो कोई खास लोग ही होंगे, जो इतनी अच्छी कहानियां लिख लेते होंगे या फिर इतना मजेदार विज्ञापन बना लेते होंगे। आपको लगता होगा कि काश हममें भी ये खास हुनर होते। हो स न इनडोर गेम्स की मदद लीजिए।

कहानी बुनो

कहानी बुनना, एक अनोखी कला है। हो सकता है ये आपके भीतर हो या फिर आपके किसी दोस्त के पास ये खूबी मौजूद हो। इस खेल के जरिए आप उसकी इस खूबी का पता लगा सकते हैं।

कितने खिलाड़ी :

इस खेल के लिए कम से कम दस खिलाड़ी चाहिएं। ताकि दो टीम में बांटे जा सकें।

क्या चाहिए

पेन या पेन्सिल छोटे-छोटे कार्ड या काग़ज़

यूं खेलें इसे

अब जितने भी खिलाड़ी हैं, उनकी दो टीम बना लीजिए। अब एक टीम के सदस्य दूसरी टीम के सदस्यों को कागज के टुकड़ें देंगे और पेन्सिल पर उनसे एक शब्द लिखने को कहेंगे। अब सभी से कागज की वो पर्चियां लेकर उसी टीम के एक सदस्य को बुलाकर उस देंगे। पर्चियों पर लिखे शब्दों को एक कहानी में पिरोने के लिए कहें। कहानी को गढ़ने के लिए एक मिनट का समय दें और सुनाने के लिए दो मिनट का। यही प्रक्रिया दूसरी टीम के सदस्य भी करें। जिस टीम की कहानी सबसे ज्यादा मजेदार होगी, वो टीम इस खेल की विजेता होगी। बुन लीजिए, अपनी कहानी भी।

एड गुरु बनते हैं!

किसी को अपनी बात समझाने में आप कितने माहिर हैं, ये परखने के लिए इस खेल से बेहतर और कुछ भी नहीं। आइए जानते हैं कैसे खेलें इसे।

कितने खिलाड़ी

इस खेल को खेलने के लिए आठ से दस खिलाड़ियों की आवश्यकता होगी।

क्या चाहिए : दो बैग

कुछ समान, जैसे- पेन्सिल, पेन, रबर, हेयर क्लिप...आदि।(घर में ऐसे सामान जो आसानी से मिल जाते हैं और जिन्हें उस बैग में रखा जा सकता है।)

यूं खेलें

इस खेल में शामिल खिलाड़ियों की दो टीम बना लीजिए। समान से भरे बैग भी दोनों टीम में एक-एक दे दीजिए। पहली टीम दूसरी को अपने पास रखे बैग में से एक समान निकाल देगी। दूसरी टीम को मिले समान को बतौर उत्पाद लेना है। इस उत्पाद के लिए मजेदार विज्ञापन तैयार कीजिए। सभी टीम से एक-एक सदस्य को बुलाइए और उसके द्वारा तैयार किए विज्ञापन को सुनाने के लिए कहिए।

अगर आपके पास वीडियोकैम है तो इसे रिकॉर्ड भी कर सकते हैं। इस विज्ञापन के लिए एक समय सीमा भी निर्धारित कीजिए। आप इसके लिए हर खिलाड़ी को 10-15 मिनट का समय दे सकते हैं। अब जिस भी टीम के सबसे ज्यादा खिलाड़ियों ने अच्छे विज्ञापन बनाए हैं, वो होगी विजेता।

उड़ जाए ये पंख

कभी कागज का कोई टुकड़ा फूंक मार कर उड़ाया है। बस यही तो करना है इसमें, पर कागज की जगह है यहां एक पंख।

कितने खिलाड़ी

इसमें चार से पांच खिलाड़ियों की आवश्यकता होगी।

क्या चाहिए : जितने खिलाड़ी उतने पंख।

यूं खेलें : इस खेल में शामिल सभी खिलाड़ियों को एक-एक पंख दें। अब एक खिलाड़ी को बोले कि अपनी फूंक के सहारे पंख को हवा में ही रखे। पांच मिनट पंख को हवा में रखने वाला खिलाड़ी विजेता होगा, वहीं अगर एक स्थान से दूसरे स्थान पर यानी एक कमरे से दूसरे कमरे तक ले जाने वाले खिलाड़ी को अतिरिक्त अंक मिलेंगे। है न एक्साइटिंग। तो कीजिए मौज ही मौज में सीखने की तैयारी...

कविता

रसीले आम

भाते हमें रसीले आम।
लम्बे, गोल, गठीले आम।

फजली, नीलम, कलमी, हापुस,
तोतापरी, दशहरी, लंगड़ा।
कोई भी कम नहीं किसी से,
डाल-डाल पर करते भंगड़ा।

कहीं छिपे शर्मीले आम।
भाते हमें रसीले आम।

केसरिया कपड़ों में कोई,
कोई हरा-हरा अलबेला।
गाल किसी के लाल टमाटर,
कोई पीला छैल-छबीला।

कैसे रंग-रंगीले आम।
भाते हमें रसीले आम।

ऊधम करते अमराई में,
सब्जीमंडी में मुस्काते।
अलग-अलग ढेरों में बैठे,
सबको अपने पास बुलाते।

खुशबूदार सजीले आम,
भाते हमें रसीले आम।

इनको खाते पप्पू-गप्पू,
सलमा-सीता, दादा-नानी।
एक नजर से जो भी देखे,
उसके मुंह में आए पानी।

आओ हम भी छीलें आम,
भाते हमें रसीले आम।

जैसे को तैसा

दीनू ने धीनू को दस हजार रुपए लौटाए, पर धीनू ने दीनू से एक लाख रुपयों की मांग कर दी। दस हजार कैसे बन गए एक लाख? है न आश्चर्य की बात! ...तो क्या मिले धीनू को एक लाख रुपए?

दीनू और धीनू दो भाई थे। दीनू बड़ा ही सज्जन और ईमानदार था। वहीं उसका बड़ा भाई, धीनू चालाक और मक्कार किस्म का था।

पुस्तैनी जमीन को बेचकर कुछ रुपए आए, जिन्हें दोनों भाइयों ने आपस में बांट लिए। धीनू ने अपने पैसे कुछ दिनों में उड़ा दिए, पर दीनू ने अपने हिस्से की रक़म संभाल ली।

साल भर बाद दीनू ने उन पैसों को निकालकर गिना और हिसाब लगाया, तो समझ में आया कि हिसाब के मुताबिक दस हजार धीनू के भी उसके पास हैं। दीनू उन पैसों को लौटाने धीनू के पास गया और बोला, 'भइया, यह पैसे आपके हैं, जो गलती से मेरे पास रह गए थे।'

रुपए देखकर धीनू खुश हो गया। पर वह लालची जो ठहरा, तपाक से बोला, 'तूने इन्हें देने में इतनी देर लगाई। अब तक इस पर मुझे बीस प्रतिशत ब्याज मिल जाता। मेरे नुकसान की भरपाई कौन करेगा?' दीनू ने कहा, 'ठीक है भइया, आपको शाम को मैं दो हजार रुपए दे जाऊंगा।' पर धीनू के मन में लालच घर कर गया था।

इसलिए और भी फायदा लेने के लिए उसने धीनू को रोका और कहा, 'अगर मैं इसे व्यापार में लगाता, तो दस हज़ार का मुनाफा होता।' दीनू बेचारा कुछ समझ ही नहीं पा रहा था, उसने लाचार होते हुए कहा, 'ठीक है भइया, मैं शाम को दस हजार रुपए आपको दे जाऊंगा।' धीनू ने पलटते हुए कहा, 'अरे, इसे मैं लॉटरी में लगाता, तो लखपति हो जाता।'

दीनू की आंखों के सामने अंधेरा छा गया और वह बोला, 'भइया इतने रुपए कहां से लाऊं? मुझे माफ कर दो, आगे से ऐसी गलती नहीं होगी।' शैतान धीनू नहीं माना,'मैं नहीं जानता, तुमको इतने तो देने ही होंगे।' दीनू रोते घर गया और अपनी पत्नी को सारी बात बताई। पत्नी ने सारा मामला पंचायत में रखने का फैसला किया। दूसरे दिन पंचायत बैठी और सारा किस्सा दीनू ने पंचायत के सामने रखा।

सरपंच ने गांव वालों से पूछा, 'क्या कोई बता सकता है कि धीनू ने अपने पैसे कभी लॉटरी में लगाए हैं?' एक बुजुर्ग ने कहा, 'नहीं, वो सिर्फ जुआ ही खेलता है।' सरपंच ने धीनू से कहा, 'अब बताओ, कैसे मानें कि तुम पैसे लॉटरी में लगाते? इसलिए तुम्हारा दावा गलत है।' धीनू ने कहा, 'ठीक है। पर मैं इन रुपयों को व्यापार में जरूर लगाता।'

यह सुनकर दूसरे बुजुर्ग बोले, 'धीनू तो निठल्ला है, यहां-वहां फिरता है, इसे व्यापार के बारे में क्या मालूम है?'

अब सरपंच ने धीनू की ओर देख कर कहा, 'तुम्हें तो व्यापार भी नहीं आता, तो मुनाफा कैसा?'

अब धीनू ने कहा, 'पर मैंने इन्हें ब्याज पर दिए ही होते।'

तब सरपंच ने सबसे पूछा, 'क्या धीनू ने किसी को ब्याज पर पैसे दिए हैं?'

गांव वाले एक दूसरे का मुंह ताकने लगे, तभी एक बुजुर्ग उठ खड़े हुए और बोले, 'अपने खर्चे पूरे होते नहीं, किसी और को क्या देगा?' सरपंच बोले, 'सुना तुमने धीनू।' धीनू वहां से जाने लगा। तभी सरपंच ने उसे रोकते हुए कहा, 'बात अभी खत्म नहीं हुई।' धीनू बोला, 'अब क्या बाकी है?'

'सारा गांव जानता है कि तुम गलत आदतों में फंसे हुए हो। वह पैसे यदि दीनू ने तुम्हें पहले दे दिए होते, तो तुमने कब के उड़ा दिए होते। अब तक उसने तुम्हें पैसे न देकर, तुम्हारे धन की सुरक्षा की है। इसका मतलब यह है कि उसे 'धन्यवाद' दोगे तुम्हारे धन की रक्षा करने के लिए।' धीनू ने बड़े भारी मन से दीनू को 'धन्यवाद' कहा और जाने लगा। फिर सरपंच ने उसे टोका और कहा, 'रुको! अभी अंतिम न्याय बाकी है।' अबकी बार धीनू झल्ला ही उठा, 'अब और क्या बच गया है?' सरपंच ने कहा, 'यदि उन दस हजार रुपयों की तुम शराब पीते तो निश्चित ही कोई न कोई बीमारी होती ही। जिसके इलाज़ में दस हजार खर्च हो जाते। इसलिए वह पैसे जो दीनू ने तुम्हें दिए हैं, उसे वापस कर दो।'

पंचायत के फैसले के आगे झुकने के सिवा धीनू के पास और कोई चारा नहीं था। उसने दीनू को पैसे लौटाए। दीनू ने बड़ी उदारता से उन पैसों को वापस करते हुए कहा, 'भइया यह तो आपके ही हैं और आप ही इन्हें रखिए।' धीनू की आंखें भर आईं। उसने दीनू को गले से लगा लिया। पंचायत तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी।